मैं अंगूर की बेल हूँ

फल लाने का राज़

maiṅ angūr kī bel hūṅ. phal lāne kā rāz

I am the Vine. The Secret of Bearing Fruit

by Bakhtullah

[Ao, Khud Dekh Lo 29]

(Urdu—Hindi script)

© 2024 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage including Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/vectors/grape-purple-grapes-vines-vine-25323/; ditto https://pixabay.com/vectors/grapes-green-plants-vines-climbing-36209/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

अंगूर की बेल की ताक़त पाओ 2

अंगूर की बेल का फल लाओ 5

अंगूर की बेल की ख़ुशी मनाओ 8

अंगूर की बेल की आज़ादी अपनाओ 10

बेल नहीं तो फल नहीं 12

इंजील, यूहन्ना 15:1-17 14

अपनी मौत से पहले पहले ईसा मसीह ने अपने शागिर्दों को कुछ हिदायात दीं। इन हिदायात का एक मक़सद यह था कि उसके चले जाने के बाद उनके दिल मज़बूत रहें। साथ साथ वह उन्हें आनेवाले नए ज़माने के लिए तैयार करना चाहता था—उस ज़माने के लिए जो रूहुल-क़ुद्स का ज़माना भी कहलाता है।

ईसा मसीह कह चुका था कि मेरे जाने के बाद रूहुल-क़ुद्स नाज़िल होगा। उसके वसीले से मैं भी तुम्हारे साथ रहूँगा। अब उसने एक नई बात छेड़ी। बात क्या थी? रूहानी फल लाने का मज़मून। रूहुल-क़ुद्स क्यों ईमानदार में बसेगा? वह ईमानदार की ज़िंदगी में रूहानी फल लाने के लिए उसमें बसेगा। यह समझाने के लिए मसीह ने अंगूर की बेल की मिसाल पेश की। पहली बात,

अंगूर की बेल की ताक़त पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैं अंगूर की हक़ीक़ी बेल हूँ और मेरा बाप माली है। वह मेरी हर शाख़ को जो फल नहीं लाती काटकर फेंक देता है। लेकिन जो शाख़ फल लाती है उसकी वह काँट-छाँट करता है ताकि ज़्यादा फल लाए। (यूहन्ना 15:1-2)

► **अंगूर की बेल कौन है?**

ईसा मसीह।

► **अंगूर का माली कौन है?**

ख़ुदा बाप।

► **बेल की शाख़ें कौन हैं?**

बेल की शाख़ें वह हैं जो ईसा मसीह पर ईमान लाए हैं। ईमान के बाइस वह शाख़ की तरह उससे जुड़े रहते हैं।

► **क्या बेल की शाख़ें बेल के बिना ज़िंदा रह सकती हैं?**

नहीं। वह मुरझा जाती हैं।

► **वह क्यों मुरझा जाती हैं?**

बेल का रस शाख़ों को फलने-फूलने देता है। रस में बेल की ताक़त है। जब यह रस शाख़ तक नहीं पहुँचता तो शाख़ मुरझा जाती है। शाख़ अपने आप में कुछ नहीं है।

► **माली ऐसी सूखी शाख़ के साथ क्या करता है?**

वह उसे काटकर फेंक देता है।

► **क्या ऐसी शाख़ किसी काम की है?**

नहीं। वह बेकार है। ऐसी शाख़ में मज़बूती नहीं है। सूखी शाख़ सिर्फ़ जलाने लायक़ है।

► **लेकिन जो शाख़ फल लाती है उसके साथ माली क्या करता है?**

वह उसकी काँट-छाँट करता है।

► **क्यों?**

काँट-छाँट ज़रूरी है ताकि शाख़ बेहतरीन फल लाए।

► **काँट-छाँट से शाख़ किस तरह ज़्यादा फल लाती है?**

माली की कोशिश यह होती है कि हर बेकार और बीमार हिस्सा दूर करे ताकि बेल का पूरा रस फल तक पहुँचे। वह फ़ज़ूल चीज़ों में ज़ाया न हो जाए। तब ही फल सबसे अच्छा बनेगा।

► **हम इससे अपने बारे में क्या सीख सकते हैं?**

- जो शागिर्द मसीह पर ईमान लाता है वह नए सिरे से पैदा होता है। तब वह नाज़ुक कोंपल बनकर अंगूर की बेल से फूटने लगता है। बढ़ते बढ़ते वह अच्छी-ख़ासी शाख़ बन जाता है। जो रूहानी ताक़त उसे हासिल है वह उसे मसीह से मिलती रहती है। मसीह की ज़िंदगी उसे तरो-ताज़ा रखती है। अगर ईमानदार बेल का रस आने न दे तो न सिर्फ़ मसीह की यह ताक़त बल्कि मसीह

ख़ुद उसकी ज़िंदगी से दूर हो जाएगा। तब उसकी रूहानी ज़िंदगी सूख जाएगी और वह फेंकने लायक़ हो जाएगा।

मसीह का शागिर्द यहूदाह ऐसा आदमी था। उसने मसीह का शागिर्द बनकर उसकी हर बात सुनी। तो भी उसने उसे अंदर से रद किया। लेकिन इसकी ज़रूरत नहीं कि हम ईसा मसीह को खुले तौर पर रद करें। यह काफ़ी है कि हम अपनी ज़िंदगी पर उसकी हुकूमत न मानें।

- जो शागिर्द मसीह से जुड़ा रहता है ख़ुदा बाप उसकी काँट-छाँट करता है। बेहतरीन फल लाने की शर्त तो यही है कि वह हमारी काँट-छाँट करे। ज़रूरी है कि हर बेकार और बीमार हिस्सा दूर किया जाए ताकि हमारी ज़िंदगी ख़ूब फल लाए।

► **हम क्या कर सकते हैं ताकि हमारी ज़िंदगी में बेल की ताक़त ख़त्म न हो जाए?**

बड़ी बात यह है कि हम मसीह को हर तरह से अपनी ज़िंदगी में आने दें। कि हमारी ग़लत हरकतें और दुनिया का कूड़ा-कर्कट रस का रास्ता बंद न करें।

► **जब हमारी काँट-छाँट होती है तो क्या दिक़्क़त नहीं होती?**

दिक़्क़त ज़रूर होती है। इसलिए ज़रूरी है कि हमें काँट-छाँट का मक़सद याद रहे। हमें यक़ीन है कि हमारा इलाही माली माहिर है, कि वह जानता है कि क्या करना है। उसकी नीयत अच्छी है, और

वह होने नहीं देगा कि हम जंगली हो जाएँ। उसका पूरा ध्यान इस पर रहता है कि हम फल लाएँ। यह बात याद करना बहुत अहम है ताकि हम मुश्किलात से दोचार होते वक़्त मायूस न हो जाएँ।

► **क्या अंगूर की बेल को भी दिक़्क़त होती है?**

- बेशक। कई तरह की दिक़्क़त होती है। जो मुक़द्दस और पाक है उससे हम जुड़ जाते हैं—हम जो कमज़ोर और नाक़िस इनसान हैं। बेल को हमारी यह कमज़ोरियाँ बरदाश्त करनी पड़ती हैं।
- मुरदा शाख़ को सहना भी मुश्किल है और उसे काटने से भी बेल को तकलीफ़ होती है।
- लेकिन बेल को यह भी बरदाश्त करना पड़ता है कि ज़िंदा शाख़ें एकदम ठीक-ठाक नहीं होतीं। तब काँट-छाँट का ज़रूरी काम बेल को भी तकलीफ़ पहुँचाता है।

हमारा आक़ा कितना हलीम है कि वह यह सब कुछ रोज़ बरोज़ बरदाश्त करता है!

► **इस काम में रूहुल-क़ुद्स का क्या हाथ है?**

रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए मसीह ख़ुद हमारे दिलों में बसता है। उसी से हमें ईसा मसीह की ताक़त मिलती है। और उसी के ज़रीए ख़ुदा बाप माली का काम करता रहता है। दूसरी बात,

अंगूर की बेल का फल लाओ

मसीह ने फ़रमाया,

> जो शाख़ बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझमें क़ायम नहीं रहते फल नहीं ला सकते। (यूहन्ना 15:4)

► **हर पौधे का सबसे अहम मक़सद क्या होता है?**

हर पौधे का मक़सद यह होता है कि वह फल लाए।

► **हर फल का क्या मक़सद होता है?**

- फल को खाया जा सकता है। उसका एक मक़सद खानेवाले को तक़वियत देना है।
- लेकिन फल का सबसे अहम मक़सद यह है कि वह बीज पैदा करे।

► **बीज से क्या पैदा होता है?**

नया पौधा। बहुत बार एक ही फल में कई बीज होते हैं। एक फल से कई पौधे उग आते हैं।

► **हमारा फल लाने का क्या मक़सद है?**

- पहले यह कि हम ईसा मसीह के नमूने पर चलें। उसकी हलीमी, उसकी मुहब्बत, उसकी हिकमत हममें सरायत करे।
- दूसरे यह कि हम दूसरों के लिए बरकत का बाइस हों। कि हमसे दूसरे भी ईमान लाएँ। कि वह भी नए सिरे से पैदा होकर रूहुल-क़ुद्स पाएँ। हाँ, कि वह ख़ुद फल लाने लगें।

ग़रज़ मसीह पर ईमान लाने से हमारी ज़िंदगी ऊपर से नीचे तक बदल जाती है। ईमान लाते वक़्त हम एक अनोखे सफ़र पर निकलते हैं—ऐसा सफ़र जिसमें चैलेंज भी होते हैं और ख़ुशियाँ भी, ख़तरे भी और सुकून भी। सफ़र का मक़सद फल है, सफ़र की मनज़िल हमारा आसमानी घर। ध्यान दें कि फल लाने के लिए हमें एक ख़ास हथियार दिया गया है। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> अगर तुम मुझमें क़ायम रहो और मैं तुममें तो जो जी चाहे माँगो, वह तुमको दिया जाएगा। (यूहन्ना 15:7)

► **हमें फल लाने के लिए क्या हथियार दिया गया है?**

माँगने यानी दुआ का हथियार। दुआ में हम हर मामला उसके सामने रख सकते हैं। इसमें हमारा एक ख़ास नमूना है—ईसा मसीह।

► **ईसा मसीह क्यों हमारा नमूना है?**

जब ईसा मसीह इस दुनिया में आया तो दुआ का यह हथियार उसके हाथ में रहता था। बहुत बार लिखा है कि वह दुआ करने किसी वीरान जगह चला गया। और ख़ुदा बाप ने उसकी सुनी। उसने उसे बहुत फल बख़्श दिया।

► **उसने उसे कौन-सा फल बख़्श दिया?**

हम ही उसका फल हैं।

► **दुआ का हथियार उसके लिए इतना अहम क्यों था?**

इसलिए कि इससे वह हर पल अपने बाप की क़ुरबत में रहता था। इससे आपस की मुहब्बत क़ायमो-दायम रहती थी। इसी से उसे ख़िदमत करने की ताक़त मिलती थी। ध्यान दें कि दुआ का एक ही मक़सद है—यह कि हम ख़ुदा की क़ुरबत में रहें, कि हमारी उससे मुहब्बत तक़वियत पाती रहे। तब ही हम उसकी ताक़त हासिल करते रहेंगे, वही ताक़त जो अंगूर की बेल से मिलती है। तब ही हम ठीक-ठाक फल लाते रहेंगे। इसलिए ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मेरी मुहब्बत में क़ायम रहो। (यूहन्ना 15:9)

जब हम दुआ में लगे रहते हैं तब हम उसकी मुहब्बत और क़ुरबत में क़ायम रहते हैं। इसी क़ुरबत में रहने से हम माँगेंगे तो वह हमारी सुनकर हमें फल दिलाएगा। उसकी क़ुरबत में नहीं रहेंगे तो हमारी सुनी नहीं जाएगी और हम फल नहीं लाएँगे।

► **क्या आपको दुआ की यह क़ुरबत और मुहब्बत हासिल हुई है? क्या आप दुआ से फल लाए हैं?**

तीसरी बात,

अंगूर की बेल की ख़ुशी मनाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि मेरी ख़ुशी तुममें हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भरकर छलक उठे। (यूहन्ना 15:11)

मसीह पर ईमान का एक अहम नतीजा ख़ुशी है। यह आम ख़ुशी नहीं है। यह उसी की ख़ुशी है—वह ख़ुशी जिसने गुनाह और मौत पर फ़तह पाई है।

► **क्या आपको यह भरपूर ख़ुशी हासिल है? ऐसी ख़ुशी जो दिल से छलक उठती है?**

दाऊद नबी ने सदियों पहले एक मशहूर ज़बूर में ख़ुदा की यह गहरी ख़ुशी बयान की,

> तू मेरे दुश्मनों के रूबरू मेरे सामने मेज़ बिछाकर मेरे सर को तेल से तरो-ताज़ा करता है। मेरा प्याला तेरी बरकत से छलक उठता है। (ज़बूर 23:5)

कितना सुकून, कितनी ख़ुशी इन अलफ़ाज़ से ज़ाहिर होती है! जब हम ख़ुद ख़ुशी तलाश करते हैं तो यह ख़ुशी खोखली साबित होती है। लेकिन जब ईसा मसीह हमें अपनी ख़ुशी दिलाता है तो हम सचमुच ख़ुश होते हैं चाहे दुश्मन हमारे रूबरू क्यों न हो।

► **क्या आपको अंगूर की गहरी ख़ुशी हासिल है?**

चौथी बात,

अंगूर की बेल की आज़ादी अपनाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुमको बताता हूँ। अब से मैं नहीं कहता कि तुम ग़ुलाम हो, क्योंकि ग़ुलाम नहीं जानता कि उसका मालिक क्या करता है। इसके बजाए मैंने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैंने तुमको सब कुछ बताया है जो मैंने अपने बाप से सुना है। (यूहन्ना 15:14-15)

► **ईसा मसीह के शागिर्द अब से क्या हैं?**

वह उसके दोस्त हैं।

► **अब से वह क्या नहीं हैं?**

अब से वह ग़ुलाम नहीं हैं।

► **जो ग़ुलाम नहीं है वह क्या है?**

वह आज़ाद है।

► **आज़ाद होने और ग़ुलाम होने में क्या फ़रक़ है?**

ग़ुलाम का फ़र्ज़ है कि वह मालिक का हर हुक्म पूरा करे। वह इनकार नहीं कर सकता। इसके उलट दोस्त अपनी आज़ादी से दूसरे की बात पूरी करता है। मसीह के शागिर्द ख़ुशी से उसकी हिदायात पर चलते हैं। इसलिए नहीं कि वह मजबूर हैं बल्कि इसलिए कि वह अपने आक़ा को ख़ुश रखना चाहते हैं।

► **ईसा मसीह ग़ुलाम और दोस्त में एक और फ़रक़ बयान करता है। वह क्या है?**

ग़ुलाम नहीं जानता कि मालिक क्या करता है। यहूदी शरीअत के ग़ुलाम ही थे। इसके मुक़ाबले में ईसा मसीह ने हमें नजात देकर सब कुछ बता दिया है जो फ़तहमंद ज़िंदगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी है। वह नहीं चाहता कि हम अंधे धुंद उसके पीछे हो लें। वह चाहता है कि हम समझ-बूझ कर उसकी हर बात मानें।

► **एक बार फिर शरीअत और फ़ज़ल में फ़रक़ की झलक दिखाई देती है। फ़रक़ क्या है?**

ईसा मसीह की आमद से पहले इसराईली शरीअत के ग़ुलाम थे। वह शरीअत के अहकाम पर चलने पर मजबूर थे। उन्हें दोस्त की आज़ादी नहीं थी जो आज़ादी और ख़ुशी से ख़ुदा की राह पर चलता है। देखो, ख़ुदा नहीं चाहता कि हम मजबूरी से उसकी मरज़ी करें। वह चाहता है कि हम आज़ादी से उसकी मरज़ी पूरी करें। यही फ़ज़ल का मतलब है।

► **जो आज़ाद नहीं है वह क्यों मालिक के हुक्म पर चलता है?**

उसे डर है, और वह सज़ा से बचना चाहता है।

► **जो आज़ाद है वह क्यों दोस्त के हुक्म पर चलता है?**

वह न डरता है न सज़ा के बारे में सोचता है। वह इतना ही चाहता है कि दोस्त ख़ुश हो।

अच्छे घराने में भी ऐसा ही होता है। अच्छे घराने में हर एक ख़ुशी से घर के फ़रायज़ अदा करता है। उसे डर नहीं कि सरपरस्त सज़ा देगा। उसे पूरी उम्मीद है कि सरपरस्त कहेगा कि शाबाश बेटा, शाबाश बेटी!

आख़िरी बात,

बेल नहीं तो फल नहीं

► हम किस तरह जान सकते हैं कि हम ग़ुलाम या दोस्त हैं?

मसीह ने फ़रमाया,

> तुमने मुझे नहीं चुना बल्कि मैंने तुमको चुन लिया है। मैंने तुमको मुक़र्रर किया कि जाकर फल लाओ, ऐसा फल जो क़ायम रहे। फिर बाप तुमको वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। (यूहन्ना 15:16-17)

► क्या ग़ुलाम अपने आपको छुड़ा सकता है?

नहीं। जो ग़ुलाम है वह अपने आपको आज़ाद नहीं कर सकता। वह तो ज़ंजीरों में जकड़ा रहता है। हम भी अपने आपको मसीह के आज़ाद दोस्त नहीं बना सकते हैं। सिर्फ़ वही हमें आज़ाद कर सकता है।

जब ईसा मसीह ने सलीब पर अपनी जान दी तो उसने मौत और गुनाह पर फ़तह पाकर ग़ुलामी के बंधन तोड़ डाले। अब से जो उस

पर ईमान लाता है वह यह आज़ादी पाता है। तब उसे मालूम हो जाता है कि यह मेरा अपना काम नहीं था, क्योंकि मैं ख़ुद बख़ुद गुनाह और मौत से आज़ादी हासिल नहीं कर सकता था। तब वह अंगूर की बेल की शाख़ बनकर बेल की ताक़त पाता है, और वह फलने-फूलने लगता है। उसकी कोंपलें निकलती हैं, फल लगता है। बेशक माली उसकी काँट-छाँट करता रहता है। फिर भी उसका दिल एक अजीब-सी ख़ुशी से भरा रहता है। क्योंकि वह जानता है कि यह इसलिए हो रहा है कि मैं अच्छा-ख़ासा फल लाऊँ। मसीह ख़ुद ने मुझे चुन लिया है ताकि मैं आज़ाद और फलदार ज़िंदगी गुज़ारूँ और एक दिन उसके पास पहुँच जाऊँ।

► **हम किस तरह मालूम कर सकते हैं कि ईसा मसीह ने हमें चुन लिया है?**

फल लाने से और फल लाने के हथियार यानी दुआ से। उसी से हम दिन बदिन अंगूर की बेल की क़ुरबत और ताक़त हासिल करते रहते हैं।

► **क्या आपको फल लाने का तजरिबा हुआ है?**

इंजील, यूहन्ना 15:1-17

मैं अंगूर की हक़ीक़ी बेल हूँ और मेरा बाप माली है। वह मेरी हर शाख़ को जो फल नहीं लाती काटकर फेंक देता है। लेकिन जो शाख़ फल लाती है उसकी वह काँट-छाँट करता है ताकि ज़्यादा फल लाए। उस कलाम के ज़रीए जो मैंने तुमको सुनाया है तुम तो पाक-साफ़ हो चुके हो। मुझमें क़ायम रहो तो मैं भी तुममें क़ायम रहूँगा। जो शाख़ बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझमें क़ायम नहीं रहते फल नहीं ला सकते।

मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उसकी शाख़ें हो। जो मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें वह बहुत-सा फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। जो मुझमें क़ायम नहीं रहता और न मैं उसमें उसे बेफ़ायदा शाख़ की तरह बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसी शाख़ें सूख जाती हैं और लोग उनका ढेर लगाकर उन्हें आग में झोंक देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं। अगर तुम मुझमें क़ायम रहो और मैं तुममें तो जो जी चाहे माँगो, वह तुमको दिया जाएगा। जब तुम बहुत-सा फल लाते और यों मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इससे मेरे बाप को जलाल मिलता है।

जिस तरह बाप ने मुझसे मुहब्बत रखी है उसी तरह मैंने तुमसे भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में क़ायम रहो। जब तुम मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हो तो तुम मेरी मुहब्बत में क़ायम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक़ चलता हूँ और यों उसकी मुहब्बत में क़ायम रहता हूँ। मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि मेरी ख़ुशी तुममें हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भरकर छलक उठे। मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैंने तुमको प्यार किया है। इससे बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुमको बताता हूँ। अब से मैं नहीं कहता कि तुम ग़ुलाम हो, क्योंकि ग़ुलाम नहीं जानता कि उसका मालिक क्या करता है। इसके बजाए मैंने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैंने तुमको सब कुछ बताया है जो मैंने अपने बाप से सुना है। तुमने मुझे नहीं चुना बल्कि मैंने तुमको चुन लिया है। मैंने तुमको मुक़र्रर किया कि जाकर फल लाओ, ऐसा फल जो क़ायम रहे। फिर बाप तुमको वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।